प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय दो

पिता परमेश्वर

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

1. परिचय **(1:01)** **4**

2. परमेश्वर **(4:04)** **4**

A. एकात्मकता *(5:53)* 4

1. बहुईश्वरवाद (6:29) 4
2. एकेश्वरवाद (11:45) 5
3. मसीहियत (18:20) 6

B. सादगी (25:45) 7

3. सर्वसामर्थी परमेश्वर (31:35) **8**

A. नाम (31:44) 8

B. व्यक्ति *(37:59)* 9

C. पितृत्व (46:24) 11

1. सृष्टिकर्त्ता (47:14) 11
2. राजा (49:57) 11
3. मुखिया (54:41) 12

D. सामर्थ (1:00:20) 13

1. असीम (1:01:15) 13
2. अतुल्य (1:09:14) 14

4. कर्त्ता (1:12:39) **14**

A. सृष्टि का कार्य (1:13:00) 14

B. सृष्टि की अच्छाई (1:20:22) 15

C. सृष्टि पर अधिकार (1:27:36) 16

1. अंतिम (1:27:53) 16
2. एकमात्र (1:31:32) 16
3. पूर्ण (1:33:35) 16

5. उपसंहार (1:36:48) **16**

पुनर्समीक्षा के प्रश्न **17**

उपयोग के प्रश्न **22**

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - **पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें** — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - **उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें** — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

1. परिचय (1:01)

पवित्रशास्त्र बल देता है कि केवल एक सच्चा परमेश्वर है — वह जिसकी आराधना मसीही करते हैं।

2. परमेश्वर (4:04)

A. एकात्मकता (5:53)

परमेश्वर ही एकमात्र परमेश्वर है।

1. बहुईश्वरवाद (6:29)

परिभाषा : एक से अधिक ईश्वरों के अस्तित्व में विश्वास

बहुईश्वरवाद में कोई एक ईश्वर ब्रह्मांड के ऊपर सम्पूर्ण नियंत्रण रखने का दावा नहीं कर सकता।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

आरंभिक कलीसिया के समय में अधिकांश गैर-मसीही बहुईश्वरवादी थे।

बहुईश्वरवाद के कारण

- प्रायः कानून इसकी मांग करते थे।

- मनुष्यजाति का पापी होना

2. एकेश्वरवाद (11:45)

परिभाषा : केवल एक ईश्वर में विश्वास

पवित्रशास्त्र दावा करता है कि केवल एक ही परमेश्वर है :

- 1 राजा 8:60 – यहोवा ही परमेश्वर है; और कोई दूसरा नहीं।
- भजन 86:10 – केवल तू ही परमेश्वर है।
- 2 राजा 19:19 – यहोवा . . . केवल तू ही यहोवा है।
- रोमियों 3:30 – एक ही परमेश्वर है।
- याकूब 2:19 – तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है; तू अच्छा करता है।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

सारे एकेश्वरवादी धर्म एक ही परमेश्वर की आराधना नहीं करते।

- यहूदी धर्म : उस त्रिएक परमेश्वर का इनकार करता है जिसे बाइबल प्रकट करती है।

- इस्लाम : यह मानता है कि परमेश्वर में "प्राणियों का कोई समूह" नहीं है।

- मसीहियत : मानती है कि एक परमेश्वर तीन व्यक्तित्वों में वास करता है।

3. मसीहियत (18:20)

विश्वास-कथन स्पष्ट रूप से यह नहीं कहता कि केवल एक परमेश्वर है।

विश्वास-कथन त्रिएकता की पद्धति के चारों ओर बुना गया है।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

विश्वास-कथन सामान्य शब्द के एकवचन रूप “परमेश्वर” के इस्तेमाल के द्वारा बहुईश्वरवाद का इनकार करता है।

परमेश्वर के नाम :

- एल शदाई : सर्वशक्तिमान परमेश्वर
- एल एल्योन : परमप्रधान परमेश्वर
- एडोनाई : प्रभु, स्वामी, शासक
- यहोवा : प्रभु, मैं हूँ

विश्वास-कथन दर्शाता है कि केवल मसीहियत का परमेश्वर ही “परमेश्वर” कहलाने के योग्य है।

B. सादगी (25:45)

परमेश्वर का सार भिन्न तत्वों का मिश्रण नहीं, परन्तु एक ही तत्व का एकीकृत रूप है।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर का सार :

- आधारभूत स्वभाव
- वह तत्व जो उसके अस्तिव की रचना करता है
- भिन्न तत्वों का मिश्रण नहीं है
- केवल एक तत्व का एकीकृत रूप

बाइबल बल देती है कि केवल एक ही परमेश्वर है . . . केवल एक ईश्वर जो तीन व्यक्तित्वों में पाया जाता है।

3. सर्वसामर्थी परमेश्वर (31:35)

A. नाम (31:44)

पिता :

- सब वस्तुओं का सृष्टिकर्त्ता
- उस संबंध को दर्शाता है जो विश्वासी दत्तक पुत्र और पुत्रियों के रूप में परमेश्वर के साथ रखते हैं।
- यीशु और उसके पिता के बीच संबंध को दर्शाता है।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब परमेश्वर को पुराने नियम में “पिता” कहा जाता है, तो वास्तव में उल्लेख सारी त्रिएकता के बारे में है।

ऐसे समय भी रहे हैं जब नया नियम “पिता” के रूप में त्रिएकता को दर्शाता है।

पवित्रशास्त्र त्रिएकता के उस व्यक्तित्व का उल्लेख करने के लिए “पिता” शब्द का इस्तेमाल करता है जो पुत्र और पवित्र आत्मा के अतिरिक्त है।

B. व्यक्ति *(37:59)*

त्रिएकता के विषय में दृष्टिकोण :

- अस्तित्व-संबंधी त्रिएकता
    - अस्तित्व से संबंधित
    - सार

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- विधानीय त्रिएकता
    - घर-परिवार प्रबंधन से संबंधित
    - किस प्रकार पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा भिन्न व्यक्तित्वों के रूप में एक-दूसरे से संबंधित हैं

पिता : “प्रथम व्यक्ति”

- अस्तित्व मीमांसा-संबंधी त्रिएकता
    - पुत्र : पिता के द्वारा जनित (“अनंत रूप से जनित”)
    - पवित्र आत्मा : पिता से निकलता है (“आत्मिक रूप से निकलता है”)

- विधानीय त्रिएकता
    - पुत्र पर अधिकार
    - पवित्र आत्मा पर अधिकार

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. पितृत्व (46:24)

1. सृष्टिकर्त्ता (47:14)

- व्यवस्थाविवरण 32:6
- यशायाह 43:6-7; 64:8
- मलाकी 2:10
- लूका 3:38
- प्रेरितों के काम 17:26-28

परमेश्वर का सृष्टि पर व्यापक पितृत्व उसे प्रेरित करता है कि वह हमारे पतित संसार के प्रति बड़ा धैर्य दर्शाए।

2. राजा (49:57)

प्राचीन पूर्व एशिया :

- लोग राजाओं को अपने पिता कहते थे
- राजा लोगों को अपने बच्चे कहते थे
    - इस्राएल के पिता के रूप में दाऊद

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

"पिता" कहलाए जाने वाला परमेश्वर

- महान राजा जिसने संसार के सारे राजाओं पर शासन किया
- प्रत्यक्ष रूप से अपने चुने हुए राष्ट्र इस्राएल पर राज्य किया

यीशु ने अपने चेलों को "हमारे पिता जो स्वर्ग में है" के नाम से प्रार्थना करने का निर्देश दिया।

3. मुखिया (54:41)

पुराने नियम में परमेश्वर को इस्राएल राष्ट्र के पारिवारिक मुखिया के रूप में चित्रित किया गया है।

परमेश्वर का अपने लोगों का पारिवारिक मुखिया होने का विवरण नए नियम में भी जारी रहता है।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

D. सामर्थ (1:00:20)

परमेश्वर के पास असीम, अतुल्य सामर्थ है

1. असीम (1:01:15)

पिता के पास वह सब करने की सामर्थ है जो वह करना चाहता है :

- ब्रह्मांड को बनाने और नाश करने
- मौसम को नियंत्रित करने
- अपने शत्रुओं को पराजित करने
- मानवीय प्रशासनों पर राज्य करने और नियंत्रण रखने
- सामर्थी चमत्कार करने
- अपने लोगों को बचाने

अपने लोगों को परमेश्वर द्वारा छुटकारा देना उसके सामर्थ की आदर्श प्रस्तुति है।

परमेश्वर ऐसा कभी कुछ नहीं करता जो उसकी प्रकृति के विरुद्ध हो।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर :

- कभी अनंत होना बंद नहीं होगा
- कभी पुत्र और पवित्र आत्मा से अपने अधिकार को वापस नहीं लेगा
- कभी कुछ पापमय नहीं करेगा
- हमेशा अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेगा

2. अतुल्य (1:09:14)

केवल परमेश्वर सर्वसामर्थी है।

केवल एकमात्र सच्चा परमेश्वर है।

परमेश्वर का बुराई के ऊपर संपूर्ण नियंत्रण है।

4. कर्त्ता (1:12:39)

A. सृष्टि का कार्य (1:13:00)

सृष्टि एक ऐसा कार्य है जिसे प्रेरितों का विश्वास-कथन विशेष रूप से परमेश्वर के साथ जोड़ता है।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उत्पत्ति 1 में सृष्टि के वर्णन के विषय में सिद्धांत :

- *एक्स निहिलो* या शून्य से (धर्मविज्ञानी सहमत)

- छः दिनों की सृष्टि (धर्मविज्ञानी असहमत) :
    - एक अकेला पल
    - आम 24 घंटे का दिन
    - दिनों के बीच का लम्बा समय
    - युग या काल

सृष्टि के कार्य में पूरी त्रिएकता शामिल है।

B. सृष्टि की अच्छाई (1:20:22)

ब्रह्मांड परमेश्वर की अच्छी सृष्टि है जो उसके अच्छे चरित्र को दर्शाती है।

मानवजाति के पाप के फलस्वरूप परमेश्वर ने सारी सृष्टि को श्राप के अधीन रखा।

परमेश्वर का संसार अभी भी मूलभूत रूप से अच्छा है।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. सृष्टि पर अधिकार (1:27:36)

1. अंतिम (1:27:53)

पिता के पास वह संपूर्ण स्वतन्त्रता है कि वह जो चाहे अपनी सृष्टि के साथ करे।

2. एकमात्र (1:31:32)

एकमात्र अधिकार केवल सृष्टिकर्त्ता के पास है, और परमेश्वर एकमात्र सृष्टिकर्त्ता है।

3. पूर्ण (1:33:35)

परमेश्वर का अधिकार उन सब पर हर प्रकार से है जिसकी उसने सृष्टि की है।

- प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के अधिकार के तले है।

- हर वस्तु परमेश्वर के अधिकार के तले है।

5. उपसंहार (1:36:48)

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. मसीही क्यों कहते हैं कि बाइबल का परमेश्वर ही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है?

2. शब्द “सादगी” का क्या अर्थ है, और यह शब्द किस प्रकार परमेश्वर के सार का वर्णन करता है?

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. किन रूपों में पवित्रशास्त्र परमेश्वर के लिए “पिता” शब्द को लागू करता है?

4. स्पष्ट करें कि “अस्तित्व-मीमांसा” और “विधानीय त्रिएकता” का क्या अर्थ है? वे किस प्रकार समान हैं? वे किस प्रकार भिन्न-भिन्न हैं?

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. परमेश्वर के पितृत्व की चर्चा करें जब यह सृष्टिकर्त्ता, राजा, और अपने लोगों के पारिवारिक मुखिया के रूप में उसकी भूमिकाओं से संबंधित है।

6. परमेश्वर के असीम और अतुल्य सामर्थ को परिभाषित करें और उसका वर्णन करें।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. सृष्टि के कार्य में सृष्टिकर्त्ता के रूप में पिता की भूमिका की चर्चा करें।

8. ब्रह्मांड किस प्रकार परमेश्वर की अच्छी सृष्टि है जो उसके अच्छे चरित्र को दर्शाती है?

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. अंतिम, एकमात्र और पूर्ण रूप में सृष्टि पर परमेश्वर के अधिकार को स्पष्ट करें।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. आपके जीवन में ऐसी कौनसी बातें हैं जो आपको उतना महत्व देने को लालायित करती हैं जितना महत्व आप परमेश्वर को देते हैं?

2. मसीहियों को यहूदी धर्म और इस्लाम के प्रति कैसे प्रत्युत्तर देना चाहिए?

3. किन रूपों में परमेश्वर सारी सृष्टि का पिता है? किन रूपों में वह मात्र विश्वासियों का पिता है?

4. किस प्रकार पिता का राजत्व और पारिवारिक मुखिया के रूप में उसकी भूमिका हमें उसकी आज्ञा मानने को प्रेरित करती है?

5. किस प्रकार पिता की असीम और अतुल्य सामर्थ उसकी संतान के रूप में हमें राहत देती है?

6. किस प्रकार सृष्टि की सुंदरता और अच्छाई परमेश्वर की अच्छाई और सुंदरता को देखने में हमारी सहायता करती है?

7. श्राप के कौनसे प्रभाव प्राकृतिक जगत और मानवीय समाज में स्पष्ट हैं?

8. किस प्रकार परमेश्वर का अधिकार हमारे उन भयों को संबोधित करता है जिन्हें हम प्रतिदिन संबोधित करते हैं

9. परमेश्वर के प्रभुत्व के प्रकाश में हम किस प्रकार जीवन में हमारी भूमिकाओं और हमारे ओहदों को सुधार सकते हैं?

10. इस अध्याय में आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org